प्रेस विज्ञप्ति

डॉ योगानन्द शास्त्री ने किया "अहिंसा परमो–धर्म जागरूकता अभियान" का शुभारम्भ

नई दिल्ली 12 दिसम्बर 12: सारे विश्व में बढ़ती हुई हिंसा के वातावरण में अहिंसा की जागृति लाने के लिए अखिल भारतीय **"अहिंसा परमो–धर्म जागरूकता अभियान"** का शुभारम्भ करते हुए **दिल्ली विधानसभा स्पीकर डॉ योगानन्द शास्त्री** ने सत्य साईं इन्टनेशनल सभागार, लोधी रोड में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में कहा कि अहिंसा का विषय अपने आप में बहुत महत्वपूर्ण है, कोई भी धर्म जिसमें अहिंसा का समावेश नहीं है वह धर्म अधूरा है। प्राचीनकाल से जितने भी धर्म रहे है उनमें अहिंसा प्रमुख रहा है। उन्होंने कहा यह संस्था अहिंसा का प्रचार करती है, जिससे दैवी प्रवृत्तियों की स्थापना होती है, और मानव का उत्थान होता है, जिससे व्यक्ति का, समाज का, देश का कल्याण होता है, इसलिए सही मायने में राष्ट्रवादी कार्य करने वाली संस्था है। एक वर्ष चलने वाले इस अभियान का आयोजन **प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय एवं टाईम्स फाउण्डेशन, टाईम्स ऑफ इण्डिया** द्वारा किया जा रहा है।

लोकसभा सांसद डॉ प्रसन्ना पटसानी ने इस अवसर पर कहा कि आज सभी में मन, भाषा और कर्म में हिंसा, क्रोध फैला हुआ है जिससे दुख पहुचता है और दुख देना महापाप है। हिंसा है क्रोध, अहिंसा है प्रेम। उन्होंने संदेश दिया कि देश की एकता रखने वाली है अहिंसा की चेतना।

ब्रह्मा कुमारी संस्था के मुख्य प्रवक्ता ब्र0कु0 ब्रजमोहन ने अभियान का उद्देश्य बताते हुए कहा कि लोग समझते है कि अहिंसा तो चल नहीं सकती, हिंसा तो जीवन में चलती है। ये अभियान हमें बताता है कि हम व्यक्तिगत तौर पर हिंसा की ओर हैं या अहिंसा की ओर। उन्होंने अहिंसा परमोधर्म का शाब्दिक अर्थ बताया कि अहिंसा अर्थात मर्यादा पूर्ण जीवन, परम अर्थात श्रेष्ठ, धर्म अर्थात धारणा। अहिंसा के धर्म का नाम नहीं होता।

नव भारत टाईम्स की वरिष्ठ सम्पादक नमिता जोशी ने कहा कि आजकल हमारे अन्दर घृणा और नफरत का भाव है। सामाजिक वेबसाईटों पर हो रही अभिव्यक्तियों के बारे में उन्होंने कहा कि अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता को कहां तक प्रकट करना है, उसे कहां तक नियंत्रण करना है आज इसकी आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इस संस्था का जो संदेश है वहीं हमारा भी है। ये अभियान क्रान्ती का रूप ले ले ये हमारी शुभ कामना है।

संयुक्त राष्ट्र संघ सूचना केन्द्र की निदेशिका श्रीमति किरण मेहरा ने कहा कि टकराव और उथल–पुथल के दौर में हम अहिंसा का सहारा ले सकते हैं। उन्होंने कहा कि अहिंसा की ताकत के साथ–साथ समान सोच वाले लागों को एक साथ कार्य करना होगा। उन्होंने ब्रह्मा कुमारीज द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ के साथ मिलकर शान्ति और अहिंसा के अभियानों की सराहना की।

यहूदी अराधनालय के सम्मानीय सचिव ई.आई.मलेकर जी ने कहा कि अहिंसापूर्ण व्यक्ति का मतलब कायरता नहीं, *उसमें प्रेम*, शान्ति, सहनशीलता है। अहिंसा के पालन के लिए हमें बच्चों को मूल्यों आधारित शिक्षा देना तथा संयुक्त परिवार में रहने की परम्तरा को लाना होगा। उन्होंने कहा कि आजकल विज्ञान मंगल पर जाकर जीवन की कल्पना कर रहे है पर इस जीवन को मंगल नहीं कर रहे हैं।

ब्रह्मा कुमारीज़ के ओमशान्ति रिट्रीट सेन्टर, गुड़गांव की निदेशिका ब्रह्मा कुमारी आशा ने कहा कि आज कोई दिन ऐसा नहीं बीतता जब हम हिंसा, अत्याचार की बातें नहीं सुनते, सबसे खतरनाक बात यह है कि हमने उसे जिन्दगी का हिस्सा बना लिया है। इसे देखते हुए निष्क्रिय होकर बैठना, अपनी चेतना को मार देना, सत्य बात को बोलने में भयभीत होना और हिंसा जनित डर से जीना यह भी हिंसा है। यह अहिंसा परमोधर्म का अभियान दृढ़ संकल्प करने के लिए है कि किसी को भी वाणी से, कर्म से, मन्सा से अर्थात संकल्प भी उत्पन्न नहीं करो जो दूसरों की भावनाओं को प्रभावित करे।

लंदन से पधारी ब्रह्मा कुमारी गोपी ने सभागार में उपस्थित लोगों को राजयोग मेडिटेशन के द्वारा शान्ति की अनुभूति करायी।

इस अभियान के तहत देश भर में ब्रह्मा कुमारीज़ के फैलें 8000 सेवाकेन्द्रों द्वारा एवं इसी विचारधारा के अन्य संगठनों के साथ संयुक्त रूप से विभिन्न सम्मेलनों, संगोष्ठियों, संवादों, प्रदर्शनियों, शिविरों और यात्राओं का आयोजन कर जागृति फैलायी जायेगी।